# हिंदी साहित्य का प्राण
## '' रामचरित मानस ''

प्रा.अनिल मनोहर जाधव
विठ्ठलराव शिंदे कला महाविदयालय टेंभुर्णी ,
तहसिल माढा, जि. सोलापुर।

**प्रस्तावनाः–**

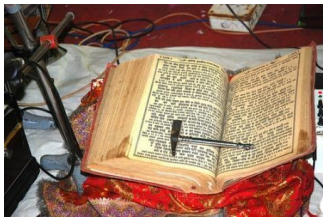

रामचरित मानस के निर्माता मद्यकालिन रचियता तुलसीदास जी है।

रामचरितामनस तुलसीदसजी का सर्वश्रेष्ठ महाकाव्य हिंदी साहित्य का अतुलनीय महाकाव्य हैं। तुलसीदासजी हिंदी के सर्वश्रेष्ठ कवि हैं। वे महानतम लोकनायक एंव लोकसेवक मध्यकालीन भारत की आत्मा तथा हिंदी भाषा के प्राण है। तुलसीदास भारत के वाल्मीकि, व्यास, कालीदास तथा शेक्सपीअर के स्तर के विश्वकवि है। रामायण तथा महाभारत के पश्चात उनका रामचरित मानस भारतीय वाङ्मय में भक्तिमार्ग का सर्वश्रेष्ठ काव्य हैं ।

रामचरित मानस को हिन्दू पाँचवा वेद मानते है। दुसरी बात एक पवित्र ग्रंथ की तरह वह घर – घर आदर के साथ पढी जाती है।इसके कई कारण है। यह अनेक विशेषताओं का भण्डार है। उस में भारतीय संस्कृती और धर्म का नवनीत सुरक्षित है। जो लोग वेद,उपनिषद, भागवत गीता आदि संस्कृत ग्रंथो को पढ नही सकते उन्हे उनका सार रामायण में मिल जाता है। तुलसीदास स्वंय संस्कृत के प्रकाण्ड विव्दान थे । उन्होने प्राचीन संस्कृत साहित्य का गहन अध्ययन किया था और राजा भागीरथ की तरह बडा तप करके ज्ञान की पावन गंगा इस मृत्यु–लोक में लाने में वे समर्थ हुए थे। उन्होंने प्रारम्भ में ही इस बात का संकेत ''नानापुराण निगमागम संमत .....'' वाले लोक में किया है। प्राचीन भारतीय साहित्य में जो कुछ सत्य है, सुन्दर है वह सब कुछ रामायण में आ गया है । भारतीय संस्कृती का मधु यदि इसे कहा जाए तो अतिशयोक्ति नही होगी। राम–कथा के माध्यम से सीधी – सरल भाषा में सर्व–साधारण को यह मधु उप्लब्ध कर दिया है।समन्वय भारतीय संस्कृती का मुल है। ज्ञान,कर्म और भक्ति ब्रम्हा विष्णु और महेश, शैव और वैष्णव सम्प्रदाय सबका समन्वय इस ग्रंथ में हुआ है ।

रामचरित मानस का महत्व धार्मिक दृष्टी से कम नहीं है। अनेक भारतीय लोग नियमित रुप से उसका पठन करते है। समय – समय उसके अखण्ड पाठ का भी आयोजन आज भी गाँव – गाँव में किया जाता है। लोगों की धारणा है कि रामायण का अध्ययन, मनन, पठन आदि धार्मिक कार्य है। इससे लोक परलोक दोनों में कल्याण होता है। धर्म के जितने भी मूल तत्व है वे सब रामायण में उपलब्ध है। वह इश्वर के निराकार और साकार दोनों रुपों पर प्रकाश डालती है। ज्ञान और भक्ति की गंगा में नहलाती है। इस में रामयण होणे के कारण उसका महत्पपुर्ण स्थान है। रामचरित मानस धार्मिक ग्रंथ तो है परंतु साहित्यिक दृष्टी से भी वह हिन्दी का अमूल्य ग्रंथ है। उसे भारतीय साहित्य का प्रतिनिधि ग्रंथ कहा जा सकते है। अतः भक्तिकाल भारतीय हिन्दी साहित्य का स्वर्ण–युग माना गया है।

रामयण पर इस नये युग में बहुत कुछ लिखा गया है। सबसे अधिक शोध ग्रंथ इसी पर लिखे गये है। रामचरित की रचना तुलसीदासजी ने जिस भावना से की है वह शाश्वत है। उसकी रचना चारसो वर्ष से अधिक हो चुकें है किन्तु उसकी लोकप्रियता में कोई कमी नहीं है। आगे भी प्रेरणाएँ मिलती हैं। रामचरित मानस भारत में हर हिंदू के घर में मिल जायगी। यह राजामहाराजा से लेकर गरीब मजदूर और किसान तक के हाथ में देखी जा सकती है। कुटिया से लेकर महलों तक में इसका समान आदर है। हिन्दी साहित्य में इतना ज्यादा प्रचार तथा प्रसार अन्य ग्रंथ का नहीं हुआ। पचासों वर्षो से कुछ प्रेस केवल इसी ग्रंथ को छापने का काम करते हैं। अकेला गोरखपूर का गीता प्रेस इसकी करोडों प्रतियाँ छपी हुई हैं।

रामचरित का इतना महत्व होने का मुख्यकारण है मानव जीवन में जो समस्याएँ आ सकती है उसका समाधान पाया जाता है। सर्व साधारण रुप से रामायण को प्रमाण मानकर उसके समाधानों अंतिम हल , भाई का भाई के प्रति, पुत्र का पिता के प्रति, राजा का प्रजा के प्रति,प्रजा का राजा के प्रति, मित्र का मित्र के प्रति,क्या कर्तव्य है, इस सबको रामचरित मानस में चित्रित किया गया है। सत्य, न्याय, प्रेम, उदारता, भ्रातृत्व, संयम, लोकहित, गरिबों के प्रति प्रेम आदि उच्च जीवन मुल्यों की चमक इसमें सर्वत्र दिखाई देती है जो कि जीवन की तेजस्वी और स्वस्थ बनाती है।

रामचरित मानस मानव जीवन का महाकाव्य हैं। इसके व्दारा तुलसीदासजी ने हमारी आध्यात्मिक और भौतिक समस्याओं को सुलझानेका प्रयत्न किया है। राम, सिता, भरत, दशरथ, कौशल्या, हनुमान, आदि के त्याग, प्रेम सेवा और कर्तव्यपूर्ण चरित्र हमारे ईर्षा, व्देश, बैर, संघर्ष से जर्जर समाज के लिए अमृतमयी नवीन जीवनदायी औषधी है। ईश्वर साकार है या निराकार यह प्रश्न तर्क का विषय नहीं है, अनुभव और विश्वास का है।

यही तुलसीदास इसके व्दारा सिदध् करना चाहते है कि इश्वर निराकार, निर्विकार होते हुए भी सगुण और साकार है। अपने विश्वास के बलपर हम उसे अनुभव कर सकते है। मानव जीवन का मुख्य ध्येय है उसका साक्षात्कार करना है, और उसका सुगम उपाय है रामभक्ति।

तुलसलीदास आधुनिक युग के नायक थे। उनमें अलौकीक शक्तियाँ थी। वे ऐसे भारत में उत्पन्न हुए थे , जो विभिन्न परिस्थितियों और विभिन्न समस्याओं से आक्रान्त थे। उन्होने समाज को देखा विषम परिस्थितियो में जो पिसता जा रहा था।

भारतीय समाज अति समस्याओं कें अंधकार में भटकता हुआ देखकर तुलसीदासजीने अपने ज्ञान की शक्ति से समाज के भयंकर रोग का निदान खोज निकाला वह निदान है 'रामचरित मानस' का समन्वय वाद। श्रीराम का पावन चरित्र समन्वयवाद का केंद्र था। राम शील सौंदर्य के प्रतिक हैं। वे मर्यादा पुरुषोत्तम तथा अलौकिक है। राम के आदर्श चरित्र को समाज के सामने रखकर तुलसीदासजीने हिंदू संस्कृती को अक्षुन्न रखने का प्रयत्न किया हैं।

रामचरित मानस की भाषा भी अवधी साहित्यिक है। सरल, सुबोध, तथा अकृतिम है इसी कारण इसका आज भी अधुनिक काल में महत्व है। डॉ.देवकीनंदन श्रीवास्तव ने आपनी तुलसीदास की भाषा नामक पुस्तक में लिखते है उनकी भाषा में वाल्मिकि की वास्तविकता, प्यार की समासशक्ति, भारवी का अर्थ गौरव, कालिदासकी, प्रासंगिता, कबीर की, ओजस्वीता, सुर कि माधुरी मर्यादीन और समन्वीत रुप में विदयमान है। रामचरित मानस भारतीय संस्कृति सार भूत ग्रंथ है । अतः हिंदी का सर्वश्रेष्ठ महाकाव्य है ।

## संदर्भ-

१. रचना और निबंध लेखन - साहित्यिक निबंध
२.हिंदी साहित्य का इतिहास - अशोक प्रकाशन-शिवकुमार शर्मा २६।५ नई सडक दिल्ली - ११०००६